नाटक

विकास पैदा होने वाला है

तीन चार कूड़ा बीनने वाले पीछे बड़ा सा झोला लटकाए और हाथ में डंडा लिए हुए इधर-उधर कूड़ा बीन रहे हैं।

1. : यार ये प्लास्टिक ना होता तो हमारा तो धंधा ही चौपट हो जाता।
2. : पर यार हल्का बहुत है, दाम नही मिलते।
1. : इसमें साले में मिलावट भी नहीं कर सकते।
3. : यार! लोग क्या –क्या फेंक देते हैं, इनके घरों में क्या-क्या होगा?
4. : फेंकने दे बेटा फेंकने दे...ये फेंकेंगे नही तो तेरा धंधा कैसे चलेगा, तू सेठ कैसे बनेगा।
1. : अबे, हरामी लपेट ले, लपेट ले बनेगा सेठ।
2. : यार पिछले धंधे में ज्यादा मज़ा था (बैठकर बीड़ी सुलगाता है) पर पुलिस का बहुत लफड़ा था। पकड़े जाओ तो साले मारते बहुत हैं, और कभी भी बुलाते हैं फिर खुद भेजते हैं कि वहां जाओ...वहां माल है...
4. : फिर तूने छोड़ा क्यों...?
3. : इसको बहुत मार पड़ी...मार से डर के छोड़ा साले ने।
2. : मैं मार से डरता नही हूं...
1. : रहने दे...जब इसके पिछवाड़े में डंडा दिया तो बेहोश हो गया साला और शहर छोड़कर भाग आया।

(सभी बैठकर बीड़ी पीने लगते हैं)

4. : हूं...तब से धंधा ही बदल दिया...पर पुलिस का लफड़ा तो इसमें क्या कम है...कहीं भी कुछ भी हो सबसे पहले हमें ही पकड़ते हैं...
1. : यार पर कितना काम करना पड़ता है मज़ा नही है।
2. : तू ये सोच गर हम ये काम ना करें तो इन शहरों का क्या हो?
3. : होना क्या था कूड़े के ढेर बन जाएं, बिमारियां फैल जाए।
4. : ऐसा हो तो मज़ा आ जाए लोग हमारे पास हाथ जोड़कर आएं...गिड़गिड़ाएं...पैरों में पड़ें...कहें, "साहब कूड़ा उठा लो...हमें बड़ी परेशानी हो रही है।"

(सभी मिलकर ड्रामा करने लगते हैं)

2. : फिर तू शहंशाह की तरह जाएगा और अपनी जनता पर एहसान करेगा और उनकी गंदगी उठाकर लाएगा...
1. : अच्छा.....तू समझता है तू सरकार का स्वच्छता प्रोग्राम चला रहा है...
3. : वो क्या कहते हैं...सफाई भारत अभियान...
4. : नहीं...संघ भारत अभियान....
2. : साले...ये नही है...वो है स्वतच्छ भारत अभियान।
4. : होगा कोई भी बड़ा ही बेतुका है।
1. : तो तू खुद को यहां का मालिक समझता है...
3. : नही वो क्या कहते हैं परधानमंत्री।

4. : सालो तुम जैसों का परधानमंत्री बनने से क्या फायदा, मैं तो बड़े लोगों का प्रधानमंत्री बनूंगा...

2. : नहीं नहीं...भाईयों बहनों मैं खुद को प्रधान सेवकक कहता हूं।

4. : मैं तो छोटा सा कार्यकर्ता हूं, स्वयंसेवक हूं।

1. : साले तू स्वयंसेवक नही हो सकता तेरे पास निक्कर कहां हैं.

4. : वो मार लाउंगा कहीं से...

3. : अबे तू कुछ नही हो सकता, तुम्हें यहीं लोगों का गू-मूत साफ करना है...इसी कबाड़े में अपनी रोटी खोजनी है।

4. : मेरे भी अच्छे दिन आएँगे..अबे ये कोई जुमला नही है...तुम सब देखते रह जाओगे...मैं बहुत बड़ा आदमी बनूंगा।

2. : अच्छा, तुम बड़ा बनके क्या-क्या करोगे।

4. : मैं...राज करूंगा..मौज करूंगा...खूब घूमने जाउंगा....पूरी दुनिया की सैर करूंगा और खूब बड़े-बड़े भाषण दूंगा...सबकी छुट्टी कर दूंगा...(फिर भाषण देता है)...भाईयों बहनों...(मोदी और हिटलर की शैली मिलाकर, जिबरिश)

दृश्य-2

नेता को कपड़े पहनाए जाते हैं, रंगीन फटका दिया जाता है, चश्मा, जूते...फिर शीशा दिखाया

जाता है, वो देखता है, निहारता है।

नेता : मेरी तलवार कहां है. तलवार भी दो अच्छी लगेगी।

1. : रहने दो खामखा चोट खा लोगे...अब चलकर दिखाओ।

2. : हंसकर दिखाओ...मां का आशिर्वाद लो, अच्छा लगेगा।

(मां के पास बैठता है, फोटो खिंचवाता है)

3. : पत्नी के पास भी चलना है क्या.

नेता : (ख़ामोश रहता है) कौन सी.

3. : असली वाली।

नेता : (चुप हो जाता है)

2. : बोलो कुछ तो बोलो।

नेता : मेरा मन भी भाषण देने का कर रहा है, तुम कहो तो...

2. : अब आपके सामने महान राष्टर भगत, परधान सेवक, और क्या कहूं(पीछे मुड़कर) पूरी दुनिया की सैर करने वाले, नही...विश्वविजेता पधार रहे हैं...

नेता : भाईयों बहनों...मैं...मैं...वो क्या कहते हैं...विश्व को...

3. : अभी से विश्व क्यों कह रहे हो।

नेता : मैं देश को महाशक्ति बनाऊंगा, बुलेट ट्रेन चलाउंगा, मेक इन इंडिया का गाना बनाऊंगा, जिस पर पूरी दुनिया नाचेगी, जिसको नाचना नही आता होगा वो भी नृत्य करेगा, उसका मन भी डोलने लगेगा...भाईयों बहनों...मैं स्मार्ट सिटी बनाउंगा, एक नहीं, दो नहीं पूरी सौ स्मार्ट सिटी बनाऊंगा...इन सबसे पहले स्मार्ट पार्टी बनाउंगा, तुम एक मिसकॉल देना, मैं दोड़ा चला आउंगा, तेरे दिल में समा जाऊंगा, तुम्हें अपना बनाऊंगा। फिर कोई हमें भारतीय जुमला पार्टी नही कहेगा...भाईयों बहनों मैं सबका साथ सबका विकास में यकीन करता हूं...आप सबके साथ से औऱ बाबा कामदेव के आशीर्वाद से मैं विकास पैदा करूंगा...मैं विकास पैदा करूंगा सारी दुनिया देखेगी।

1. : बस...बस...और क्या-क्या फेंकेगा...नीचे आ...

2. : यार तू तो ग़जब का भाषण देता है।

नेता : तुमने बीच में रोक दिया नहीं तो और भी बहुत कुछ बोलता...बातें अपने आप बनने लगती हैं...यार मज़ा आ रहा था।

3. : अबे फेंकू, स्टेशन पर लोगों के हगने-मूतने की जगह नहीं है तू बुलेट ट्रेन चलाएगा...लोग कीड़े-मकोड़ों की तरह ठूसे चलते हैं।

2. : बुलेट ट्रेन का मतलब क्या हुआ...क्या ट्रेन बुलेट पर बैठके चलेगी।

1. : अबे, तुम्हारे जैसे को कोई एसी डिब्बे में तो चढने नही देता है...बुलेट ट्रेन किसके लिए होगी।

नेता :तुम्हारे जैसे भिखमंगों के लिए नही होगी...तुम्हारे जैसों को तो कोई स्मार्ट सिटी में भी नही घुसने देगा...बेटा वहां गंदगी कूड़ा कुछ नही होगा, हाईटेक इंतज़ाम होगा हाईटेक। तुम्हारे जैसे गंदे लोगों को दूर से ही लात मारेंगे।

दृश्य-3

टाटा, रिलायंस, बिड़ला, अडानी का फलैक्स लिए लोग खड़े हैं। हाईप्रोफाइल मीटिंग है।

एक आदमी कुर्सी पर बैठा है, बाकि उसे आदेश देते हैं।

पूंजीपति 1. : रिफोर्म में बहुत टाइम लग रहा है।

पूंजीपति 2. : पूर्ण बहुमत के बाद भी।

पूंजीपति 1. : ये डेमोक्रेसी डेवलेपमेंट नही होने देगी।

पूंजीपति 3. : हमने कितना इनवेस्टमेंट किया है।

नेता : जो काम 60 साल में नही हुए हमने कर दिए। लेबर रिफोर्म कर दिया, इंस्पेक्टर राज खत्म कर दिया, टैक्स रिफोर्म किया, मनरेगा में कटौती कर दी, विदेशी पूंजी निवेश का वातावरण बना दिया, आप लोगों को पूरी दुनिया की बिजनैस बिरादरी से मिलवा दिया, भूमि अधिग्रहण का कानून भी बन जाएगा, सारी रुकावट मैं खत्म कर दूंगा।

पूंजीपति 1. : तुम बोलते बहुत हो, हमें गैस सब्सिडी छोड़ने को कहने की क्या ज़रूरत थी।

पूंजीपति 3. : अभी तक स्मारेट सिटी का कुछ नही हुआ।

पूंजीपति 2. : बुलेट ट्रेन कब आएगी।

पूंजीपति 3. : और तुम ये लोगों के घर बनाने की क्या बकवास कर रहे हो, ज़मीन हम लोगों के घर बनाने के लिए नही ले रहे।

नेता : वो तो लोगों को समझाने के लिए कहा है।

पूंजीपति 2. : ज़मीन हम ले रहे हैं, क्योंकि हम ले सकते हैं, फिर वहां क्या बनेगा, क्या नही बाद में पता चलेगा।

दृश्य-4

इंजीनियरिंग की क्लास है, बच्चों को टाई दी जाती है, सिर पर हेल्मेट और मैं

आंखों पर पट्टी बांध दी जाती है।

डायरेक्टर : आज से नए गुरु जी आपको पढाएंगे, इन्हें खासतौर पर सरकार ने भेजा है।

गुरु : बच्चों खड़े हो जाओ(बच्चे खड़े हो जाते हैं) कहो प्रणाम गुरु जी।

छात्र : प्राणम गुरु जी।

गुरु : बच्चों बैठ जाओ (बच्चे बैठ जाते हैं)। आप सब इंजीनियरिंग पढने आए हैं।

छात्र : येस गुरु जी।

गुरु : इंजीनियरिंग, आधुनिक भारत के निरर्माण के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। तो बताओ, इंजीनियरिंग की पढाई के लिए सबसे जरुरी क्या है।

छात्रा : आज देश के सामने बहुत सी मुश्किलें हैं। साईंस एंड टेक्नोलॉजी में इन मुश्किलों का आसान हल निकालकर लोगों के जीवन को आसान बनाना हमारा काम है।

गुरु : कोई और बताओ।

छात्र : साईंस एंड टेक्नोल़जी का मतलब आज बहुत बदल गया है, इसमें बिजनेस की अपार संभावनाएं हैं। लोगों को आधुनिक जीवन पसंद होता है, उनकी यह पसंद ही इंडस्ट्री को आगे बढने का एक मौका देती है।

गुरु : यह सब तो हो गया, कोई यह बताओ कि इंजीनियरिंग की पढाई के लिए सबसे ज़रुरी क्या है (सब ख़ामोश)। देखो हमारे ऋषि-मुनियों ने ज्ञान और विज्ञान का विशाल भंडार जमा किया है और वह जमा है हमारे वेदों और पुराणों में, और वेद और पुराण लिखे हैं संस्कृत में, तो साईंस एंड टेक्नोलॉजी की उच्चतम शिक्षा हासिल करने के लिए सबसे ज़रूरी है संस्कृत का ज्ञान हो(सभी छात्रों में खुसरःफुसर होती है)।

छात्र : गुरु जी, फिर ये बुलेट ट्रेन, स्मार्ट सिटी, मेक इन इंडिया यह सब कैसे होगा।

गुरु : होगा..होगा जरूर होगा, जैसे अब तक होता आया है और उससे भी बेहतर होगा।

छात्र : सर, जो मशीन...जो दवाएं...जो गाड़ियां देश के बाहर से आती हैं वो महंगी हैं। अगर वो यहां बनें, अपने देश में, अपने देश की लेबोरेट्री में, देश के कारखानों में तो वो इतनी महंगी नहीं होंगी...

गुरु : देखो बेटा इतना मोह-माया में नहीं पड़ना चाहिए। हमारे ऋषि-मुनियों ने लाखों साल की तपस्या से जो ज्ञान पैदा किया है तुम उसको ग्रहण करो बाकि सब ईश्वर पर छोड़ दो। महंगा सस्ता वो खुद देख लेंगे। (छात्र हंगामा करके बाहर आ जाते हैं)

छात्र 1. : ओए ये क्या हो रहा है? क्या सोचा था?

छात्र 2. : हम समझते थे बदलाव होगा, हमें भी कुछ मौका मिलेगा।

छात्र 3. : मिलेगा ना मौका, बेटा पुजारी बन जा, अच्छा बिजनेस है।

छात्र 4. : हम इंजीनियरिंग क्यों पढ रहे हैं। ओए, कोई भी कुछ भी क्यों पढेगा। सबकुछ तो पहले से किया जा चुका है, फिर हम यहां घंटा कर रहे हैं।

छात्र 2. : भूल जा बेटा देश में अपना कारखाना लगेगा, अपनी टेक्नोलॉजी बनेगी, घंटा विकास होगा, ये सबकुछ पहले की तरह बाहर से मंगाते रहेंगे और अपना कमीशन बनाते रहेंगे।

दृश्य-5

लेबर रूम से प्रधानमंत्री की कराहने की आवाजें आ रही हैं, बाहर अफसरों और नेताओं की भीड़ है।

- वो उनके दोस्त है ना...बाबा कामदेव...
- उनकी सलाह पर या उनके प्यार में या जैसे भी उनकी दवा खा ली।
- कौन सी दवा।
- पुत्र जीवक वटी...

(तभी कराहने की आवाज आती है)

- इस बाबा कामदेव के चक्कर में कैसे आए।
- ये बहुत चमत्कारी है।
- अरे दोनों में बड़ा याराना है।
- किसी और एजेंसी से भी बात करनी चाहिए थी।
- इन्होंने हैल्थ मिनिस्टरी से सलाह नहीं ली।
- सलाह तो बहुत ली बाहर भी ली, बहुत देशों से भी ली, फिर अंत में नागपुर की सलाह से फाइनल हुआ।
- अब क्या हालत है (कराहने की आवाज)।
- हालात ठीक नही है। सारे टेस्टों से पता करवाया, सोनोग्राफी भी करवाइ फिर पता चला कि दो पुत्र हो रहे हैं।
- हूं...मीडिया को बता दिया, दोनों के बारे में।
- नही...नसीब का ही बताया था...
- नसीब तो हो गया है...पर विकास नही हो रहा है...कहीं कुछ गड़बड़ है बीच में ही अटक गया है।
- हो जाएगा-हो जाएगा, थोड़ा धैर्य रखो।
- बेचारे बड़े तड़प रहे हैं।

- नहीं हुआ तो।
- बीच में रह गया तो।
- साईंस एन टेक्नोलॉजी की मदद लेनी चाहिए।
- नागपुर फोन लगाऊं।
- अरे वो यकीन नही करते।
- क्या नागपुर का यकीन नही करते।
- नही साईंस एन टेक्नोलॉजी का।
- वो कहते हैं जिस ढंग से गांधारी सौ पुत्रों को जन्म दे सकती है, क्या मैं दो भी नही कर सकता।
- और मेरे ये दो पुत्र ही सौ पर भारी पड़ेंगे।

दृश्य-6

स्टेज के अगले भाग के मध्य में काला कपड़ा लेकर दो लोग खड़े हैं। जिस पर 1% vs 99% लिखा है। कपड़े में जगह-जगह छेद हैं, जिनसे कलाकार हाथ और पैर निकालेंगे।

- पुलिस के जूतों की आवाजें जो किसी को कुचलने जैसी होती हैं। लाठीचार्ज की,

पानी की बौछारें चलाने की, गोली चलाने की आवाज़ें। पर्दे के एक तरफ मोदी और अमित शाह खड़े तमाशा देख रहे हैं।

- पर्दे के दूसरी तरफ दो कलाकार पुलिस की वर्दी में।
- काले पर्दे में से दो हाथ निकलते हैं(संगीत बजता है), फिर दो हाथ और निकलते हैं(हाथ तड़पने की मुद्रा बनाते हैं, झेलने और बेबसी की मूवमेंट करते हैं)।
- पुलिस वाले लाठीचार्ज की मुद्रा में रहते हैं, इधर-उधर अफरा-तफरी मचाने की कोशिश करते हैं(फिर पुलिस वाले कलाकार भी पर्दे के पीछे जाकर एक्ट में शामिल हो जाते हैं, अब मोदी और शाह भी पर्दे के पीछे चले जाते हैं और एक्ट में शामिल हो जाते हैं)।
- संगीत अब धीरे-धीरे बदलने लगता है। पर्दे से पैर बाहर आते हैं...हाथों में रंगत आने लगती हैं, पैरों में कुछ दृढता बढने लगती है...संगीत में विश्वास पैदा होने लगता है। हाथों की गति भी विश्वास से भरने लगती है, हाथ आसमान में उठने लगते हैं, मुट्ठियां तनने लगती हैं। काला कपड़ा गिर जाता है, सभी मेहनतकश लोग दिखाई देते हैं, दृढता, विश्वास और एकजुटता की मुद्रा में आकृतियां बनाते हैं।